श्री नन्दीश्वर द्वीप विधान

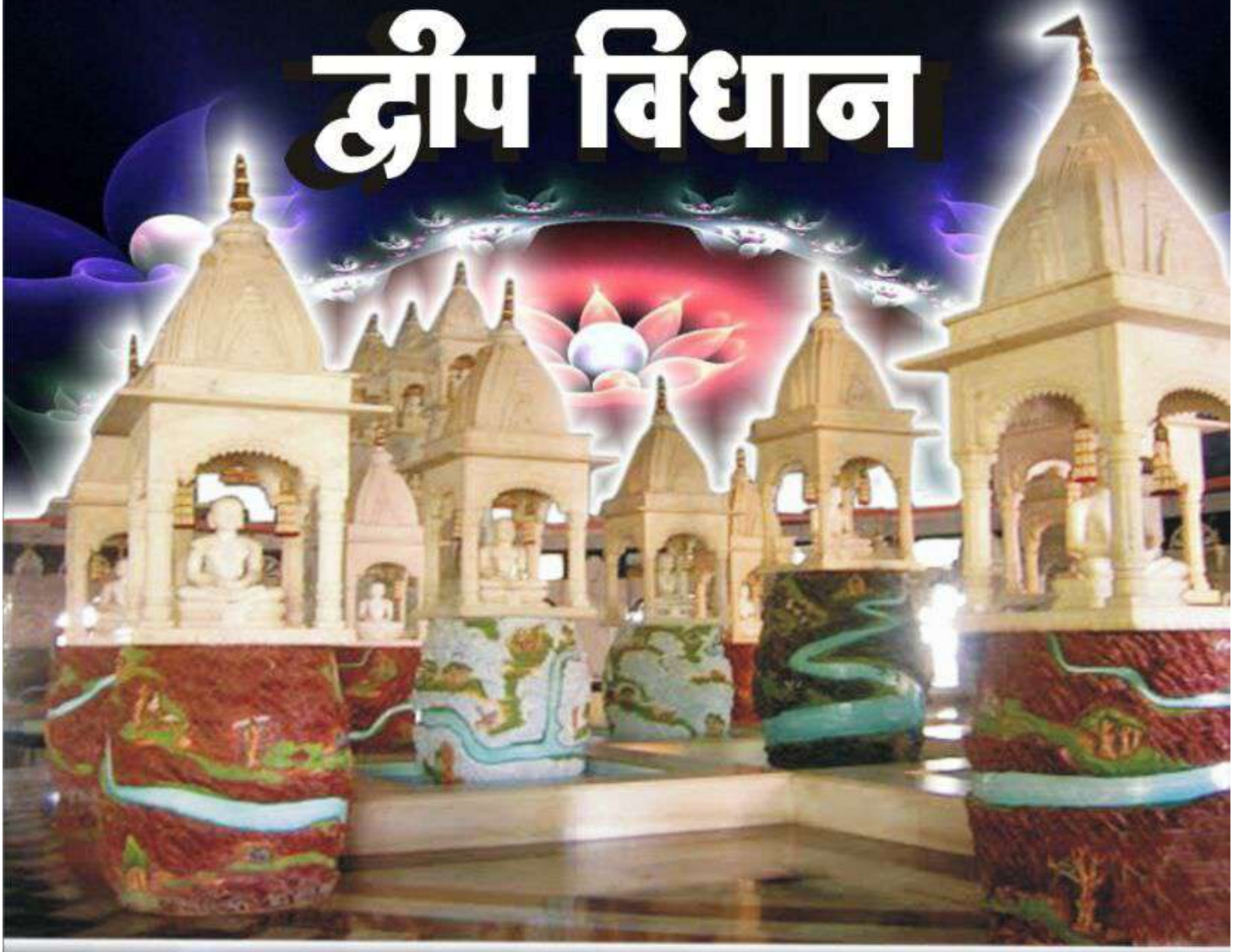

आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

आर्यिका आस्थाश्री माताजी

नन्दीश्वर व्दीप विधान

नंदीश्वर व्दीप विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

संपादन

प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार

गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1.	आशीर्वाद–ग.ग.आचार्य कुंथुसागरजी	7
2.	शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें–आचार्य कनकनन्दीजी	8
3.	सम्पादकीय–आशीर्वाद – आचार्य गुप्तिनन्दीजी	10
4.	जैन धर्म में भावना का महत्त्व – मुनि महिमासागरजी	15
5.	धर्म कर्म निवर्हणम् – मुनि सुयशगुप्तजी	17
6.	भादो भी होगा भक्ति का सावन – मुनि चन्द्रगुप्तजी	18
7.	स्व कथ्यम् – गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी	19
8.	तीर्थंकर पद की हेतू, सोलहकारण भावना– गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी	20
9.	विधान मंडल	37
10.	विनय पाठ	40
11.	पूजा आरम्भ	41
12.	नित्यमह पूजन–गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी	46
13.	श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन–आचार्य गुप्तिनंदीजी	50
14.	ऋद्धि मंत्र	53

श्री नंदीश्वर द्वीप विधान

65.	श्री नंदीश्वर पूजन विधान	282
66.	नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिश जिनालय पूजा विधान	287
67.	नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिश जिनालय पूजा विधान	294
68.	नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिश जिनालय पूजा विधान	301
69.	नन्दीश्वर द्वीप उत्तर दिश जिनालय पूजा विधान	307
70.	समुच्चय जयमाला	314
71.	प्रशस्ति	316
72.	नन्दीश्वर द्वीप की आरती	317

आशीर्वाद

पुण्य ही जीव की सद्गति कराता है, सद्गति से मनुष्य को मोक्ष प्राप्त होता है, सच्चा सुख उसी को कहते हैं। संसारी जीव को सच्चे सुख के लिये ही प्रयत्न करना चाहिए, आचार्यों ने इसीलिये देवपूजा का विधान गृहस्थों के लिये अनिवार्य किया है। सद् गृहस्थ को प्रतिदिन जिनपूजा करना चाहिए। द्रव्यसहित भावपूजा करना चाहिये, पूजा पुण्यानुबंधी पुण्य कमाने के लिये है। **आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी** ने त्रिकाल चौबीसी और पंचकल्याणक विधान लिखे हैं और **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, मोक्षशास्त्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान आदि आठ विधानों को लिखा है, व्रत विधान करने से जीव को परम्परा से मुक्ति प्राप्ति होती है, गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी का परिश्रम कब सार्थक होगा, जब सद्ग्रहस्थ व्रत करें, विधान करें। आप सभी विधानों को करके अवश्य पुण्य लाभ उठावें, ऐसा मेरा कहना है। गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी को, प्रकाशक को मेरा आशीर्वाद।

-ग.ग. कुन्थुसागर

शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें

राग – सुवर्ण पात्री मंगल आरती.. मराठी राग (चौपाई)

(तीर्थंकरों का सामान्य वर्णन)

आत्म उद्धारक विश्व प्रबोधक अनन्त ज्ञान सुख वीर्यवान्।
अनन्त दर्श के स्वामी भगवन्, घातीकर्म नाशक अरहन्॥ टेक॥

सोलह भावना बल पर बनते तीर्थंकर केवली महान्।
अतिशय युक्त पञ्चकल्याणों से होते हैं प्रभु शोभितवान्॥1॥

गर्भ से पूर्व होती रत्नवृष्टि माता देखती स्वप्न महान्।
देवों के द्वारा होती पूजित जिनेश माता पुण्य से जान॥2॥

जन्म होने पर होता अभिषेक पाण्डुक शिला पर महान्।
हजार आठ कलश के द्वारा देव करे उत्सव महान्॥3॥

राजकुमार राजा चक्री बन करते प्रजापालन श्रीमान्।
कोई बाल ब्रह्मचारी होते कोई विवाह भी करते जान॥4॥

बाह्य अन्तःकरणों से जब होता वैराग्य सौभाग्य जान।
लौकान्तिक करते अनुमोदन दिव्य पालकी से वनगमन॥5॥

सिद्धों को करके सुमिरन पञ्चमुष्टि केशलोंच करें महान्।
अन्तरंग-बाह्य परिग्रह तजकर निर्ग्रन्थ रूप धरे महान्॥6॥

गर्भ से होते त्रिज्ञानधारी क्षायिक सम्यग्दृष्टि महान्।
दीक्षा से होता मनःपर्यय भी चौंसठ ऋद्धि अलौकिक जान॥7॥

बाह्य-आभ्यन्तर तपस्या करते सात्विक आहार लेते जान।
इसी से होते पञ्च आश्चर्य आहारदान का गुण बखान॥8॥

शुक्ल ध्यान से श्रेणी आरोहण करके घाती कर्म करें हनन।
अनन्त चतुष्टय धारी बनकर साक्षात् तीर्थेश जान॥9॥

समवशरण की रचना होती देवकृत अति मनोहर/(चमत्कार)।
गन्धकुटी बाहर सभा मध्ये विराजमान होते भगवान्/(जिनवर)॥10॥

सर्वभाषामयी श्रीवाणी खिरे श्रवण करे पशु देव नर।
गणधर उसे गुन्थित करते द्वादश जिनवाणी का सार॥11॥

हमारी संघस्था उदीयमाना कवियित्री **गणिनी आर्यिका श्री आस्थाश्री** के द्वारा रचित **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, तत्त्वार्थ सूत्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान'**, ये अनेक विधान लिखे हैं उनका सदुपयोग करके विश्व मानव सातिशय पुण्यार्जन करें एवं परम्परा से मोक्ष प्राप्त करें ऐसी मेरी शुभकामनायें हैं। **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री** भी रत्नत्रय की साधना एवं सोलहकारण भावना के द्वारा स्व-पर विश्वकल्याण करते हुये स्वात्मोपलब्धि करें ऐसा शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें सह-

-आचार्य कनकनंदी
खाखड (उदयपुर) राज.
28-5-2012

सम्पादकीय-आशीर्वाद

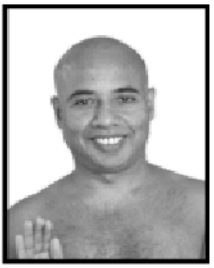

सोलहकारण दिव्य भावना, तीर्थंकर पद की दातार।
दशलक्षण आतम के लक्षण, करते पापों का परिहार॥
उनको भायें निशदिन ध्यायें, करने निज आतम उद्धार।
उनके धारक श्री जिन मुनि को, करते वंदन बारम्बार॥
पंचमेरु और नंदीश्वर के, जिनवर का हम करते ध्यान।
रविव्रत के श्री पार्श्वनाथ से, हो जाये मेरा उत्थान॥

भावनायें अनेक प्रकार की होती हैं। जैसे–सद्भावना, दुर्भावना, प्रशस्त भावना, अप्रशस्त भावना। प्रशस्त भावनाओं में बारह भावना, मेरी भावना, सोलहकारण भावनाओं आदि का समावेश होता है। इन सभी भावनाओं में सोलहकारण भावना सातिशय पुण्य भावना है।

जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड आदि जैन आगम के अनुसार यदि कोई संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक, भव्य पुण्यात्मा जीव किसी तीर्थंकरादि केवली या श्रुतकेवली के पादमूल में विधिबद्ध ढंग से इन सोलहकारण भावनाओं का चिंतवन करता है तो वह तीर्थंकर पुण्य प्रकृति का बंध कर सकता हैं।

इसके अतिरिक्त षोडशकारण की व्रत कथा के अनुसार मुनियों के प्रति दुर्व्यवहार करने का फल भोगने वाली कुरूपा निंदनीया कालभैरवी कन्या ने पश्चात्ताप के साथ इस व्रत को सम्पन्न किया। जिससे मुनि निंदा के पाप से बचकर उसी कन्या ने आगे स्त्रीलिंग को छेदन कर, सीमंधर तीर्थंकर के महान् पद को प्राप्त किया। अर्थात् मुनि निंदा के प्रायश्चित्त हेतु भी यह व्रत करना चाहिए।

वर्ष में तीन बार आने वाला यह पर्व हमें दिशाबोध देता है कि तीर्थंकर कैसे तीर्थंकर बने ?

हमारे आदर्श क्या हो ? साधारण मानव भी आगे कैसे तीर्थंकर बन सकता है।

इसी प्रकार दशलक्षण धर्म, आत्मा का धर्म है। जैन संस्कृति में दशलक्षण पर्व का विशेष महत्त्व है। पर्वों में महापर्व, पर्वाधिराज पर्यूषण को माना गया है। पर्यूषण पर्व भी वर्ष में तीन बार आता है किन्तु भाद्रपद मास में आने वाला दशलक्षण पर्व जैन समाज में विशेष रूप से मनाया जाता है। सम्पूर्ण भारतवर्ष के जैन धर्मावलम्बी श्रावक चाहे देश में हो या विदेश में रहे। वह अनिवार्य रूप से भाद्रपद मास के पर्यूषण पर्व पर

अपनी सांसारिक क्रियाओं से निवृत्त होकर ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए दस दिनों तक नियम संयम के साथ दशलक्षण धर्म की महा–आराधना करते हैं।

धूमधाम से गीत, संगीत, वाद्ययंत्रों के साथ पूजा विधान करते हैं। इसलिए समय–समय पर हमारे आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका माताजी व श्रावकों ने कभी प्राकृत भाषा में, कभी संस्कृत में कभी ढुढ़ारी भाषा में तो कभी हिन्दी में छोटे या बड़े रूप में अनेक प्रकार से सोलहकारण व दशलक्षण विधान की रचना की है।

इसी श्रृंखला में **आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने अपनी भक्ति काव्य कला का सद्पयोग करते हुए **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, तत्त्वार्थ सूत्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान'** को लिखा है। माताजी एक ऐसी पुण्यात्मा है जिन्होंने मात्र तेरह वर्ष की बाल्यावस्था में घर, परिवार त्याग कर ''आर्यिका विशालमति माताजी'' के मार्गदर्शन में अपनी अध्यात्म यात्रा प्रारम्भ की। तत्पश्चात् जैनागम का गहन अध्ययन करने के लिये **'वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव'** का पावन सान्निध्य प्राप्त किया। धर्मपिता आचार्य गुरुदेव ने जहाँ आपको शास्त्राभ्यास कराया।

वहीं मर्यादा श्रमणमोत्तम आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ने अपनी प्रथम शिष्या की आर्यिका दीक्षा अपने दीक्षा गुरु **गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव** से करवायी और इस तरह ब्रह्मचारिणी कुमारी लीला 17 फरवरी, 1997 को गुजरात प्रांत के अहमदाबाद नगर में **आर्यिका आस्थाश्री** बन गई। सन् 1994 से निरन्तर संघ में रहते हुए आपकी अध्यात्म साधना निरन्तर चलती रही।

दोहा– पंचमेरु के जिन भवन, उनमें जिन भगवान।
उनको ध्याऊँ रात–दिन, दर्शन दो भगवान॥

जैन संस्कृति में पंचमेरु का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ढाई द्वीप में पाँच मेरु होते हैं। जम्बूद्वीप के बीचोंबीच प्रथम सुमेरु पर्वत है। धातकी खण्ड द्वीप के पूर्व और पश्चिम भाग में विजय व अचल मेरु हैं। पुष्करार्द्ध द्वीप के पूर्व व पश्चिम में मन्दर व विद्युन्माली मेरु हैं।

इनमें से प्रथम सुदर्शन मेरु की ऊँचाई एक लाख चालीस योजन है व अन्य चार मेरु पर्वतों की ऊँचाई चौरासी हजार योजन बतायी है। इन पाँच मेरुओं में (1) भद्रशाल (2) नन्दन (3) सौमनस (4) पाण्डुक नामक चार वन हैं। चारों वनों की चारों दिशाओं में चार–चार जिनालय हैं। प्रत्येक जिनालय में 500 धनुष ऊँची 108–108 जिन प्रतिमायें हैं। इस प्रकार एक मेरु के चारों वनों के 16 चैत्यालयों

की 108-108 जिन प्रतिमायें मिलाने पर एक मेरु की 1728 जिनप्रतिमायें होती हैं। जैन शास्त्रों में पाँचों मेरु की कुल आठ हजार छह सौ चालीस जिन प्रतिमायें बनायी हैं। उनमें सभी प्रतिमाओं में प्रत्येक के समीप सर्वाण्ह यक्ष, सनत्कुमार यक्ष व श्रीदेवी और श्रुतदेवी की प्रतिमा भी शाश्वत स्थित है। प्रत्येक जिन प्रतिमा अष्ट महाप्रतिहार्य व अष्ट मंगल द्रव्य से विभूषित है।

पाँचों मेरु के पाण्डुक वनों की चार विदिशाओं में चार-चार शिलायें हैं। उनके क्रम से (1) पाण्डुक शिला (2) पाण्डुकम्बला शिला (3) रक्ता शिला और (4) रक्तकम्बला शिला नाम हैं। इन शिलाओं पर निर्धारित (भरत, ऐरावत, पूर्व, पश्चिम विदेह) क्षेत्र के बाल तीर्थंकरों का जन्माभिषेक होता है।

हम इसे प्रथम सुमेरु पर्वत से समझते हैं। सुमेरु के पाण्डुक वन की ईशान दिशा में स्थित पाण्डुक शिला पर भरत क्षेत्र के तीर्थंकरों का, आग्नेय दिशा में स्थित पाण्डुकम्बला शिला पर पश्चिम विदेह के तीर्थंकरों का, नैऋत्य दिशा में स्थित रक्ता शिला पर ऐरावत क्षेत्र के तीर्थंकरों का और वायव्य दिशा में स्थित रक्तकम्बला शिला पर पूर्व विदेह के तीर्थंकरों का अभिषेक होता है। इसी प्रकार अन्य क्षेत्र के मेरु पर्वत के विषय में जानना चाहिए।

उन शिलाओं पर एक-एक सिंहासन और दो-दो भद्रासन होते हैं। जिनमें से सिंहासन पर बाल तीर्थंकर को विराजमान करके दोनों भद्रासनों पर सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी व ईशान इन्द्र-इन्द्राणी बैठकर 1008 कलशों में भरे क्षीरसागर के फल से बाल तीर्थंकर का जन्माभिषेक करते हैं। वह क्षीर सागर का जल भी दूध के समान स्पर्श-रस-गंध-वर्ण वाला होता है। जैनाचार्यों ने 1008 कलश 8 योजन (96 किमी.) गहरे, चार योजन (48 किमी.) चौड़े व मुख 1 योजन (12 किमी.) का बताया है। ऐसे बड़े-बड़े 1008 कलशों से श्री बाल तीर्थंकर भगवान का जन्माभिषेक होता है। इसी प्रकार अन्य चार मेरु पर्वतों व धातकी खण्ड द्वीप व पुष्करार्ध द्वीप के विषय में जानना चाहिए। पाँचों मेरु का सुन्दर-सा वर्णन 'श्री तिलोयपण्णत्ति', 'श्री त्रिलोक सार', 'श्री हरिवंश पुराण' आदि ग्रन्थों में विस्तार से मिलता है।

पंचमेरु को लक्ष्य करके ही पंचमेरु पुष्पाञ्जलि व्रत किया जाता है। इस व्रत के प्रभाव से एक ब्राह्मण पुत्री ने क्रम से देवपद, मनुष्य होकर चक्रवर्ती पद व आगे उसी भव से सिद्धपद प्राप्त किया।

प्रत्येक वर्ष में तीन बार आने वाले दशलक्षण पर्व की पंचमी से नवमी तक यह व्रत किया जाता है। व्रत में शक्ति अनुसार उपवास या एकाशन करके पंचमेरु का विधान किया जाता है।

दोहा– जम्बुद्वीप से आठवाँ नन्दीश्वर हितकार।
उसके सब जिनबिम्ब को वन्दन बारम्बार॥

संघ में 'श्री तिलोय पण्णत्ति ग्रन्थराज'' का स्वाध्याय चल रहा है उसमें मध्यलोक के आठवें नन्दीश्वर द्वीप का विस्तृत वर्णन पढ़ा। पढ़कर मन में अत्यानंद हुआ। उस समय ही **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने उनके द्वारा सृजित नंदीश्वर विधान की नवीन रचना अवलोकनार्थ दी। उसमें तिलोय पण्णत्ति को आधार लेकर माताजी ने 'नन्दीश्वर विधान' में नंदीश्वर द्वीप का, वहाँ–वहाँ के वैभव और पूजा विधि का बहुत सुन्दर वर्णन किया है। नंदीश्वर व्रत कथा से इस व्रत विधान की महिमा ज्ञात होती है। व्रत कथा के अनुसार कुबेर दत्त वैश्य और सुन्दरी सेठानी के पुत्र श्रीवर्मा ने नन्दीश्वर व्रत का विधिवत पालन किया। जिसके प्रभाव से वे स्वर्गादिक सुख भोगकर आगे हरिषेण चक्रवर्ती बने तथा उसी भव में पुनः व्रतकर आगे मुनि बने वा मोक्ष गये। व्रत के प्रभाव से अनंत वीर्य आगे चक्रवर्ती बना। जयकुमार सेनापति भगवान वृषभदेव के 72वें गणधर बने। इस व्रत की महिमा से कोटिभट् श्रीपाल का कोढ़ मिटा तथा आगे सर्वसुखों के साथ मोक्ष सुख भी प्राप्त हुआ। इत्यादि अनेक उदाहरण प्रथमानुयोग ग्रन्थों में इस व्रत की महिमा बतलाते हैं। प्रस्तुत विधान में 52 अर्घ और 6 पूर्णार्घ हैं।

दोहा– पार्श्वनाथ भगवान हैं, सर्व सुखों की खान।
उनका रविव्रत श्रेष्ठ है, देता सिद्धी निधान॥

भगवान पार्श्वनाथ का पावन जीवन चरित्र समतामूलक है। उनकी दस भव की साधना क्षमा की साधना है। साहस व धैर्य की साधना है। भगवान पार्श्वनाथ ने अपने दस भवों में आये संघर्ष व उपसर्ग पर एकमात्र समता से सफलता प्राप्त की। उनके वैरी कमठ ने जितनी बार उनको दबाया, पीड़ित किया उतना ही भगवान ऊपर उठते गये, सफलता का शिखर प्राप्त करते गये। उन्होंने ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दिया बल्कि क्रोध का सामना क्षमा से किया। उन्होंने क्रोध की अग्नि पर क्षमा का जल डाल दिया। भगवान को परेशान करने वाला स्वयं हर बार दुःख के महासागर में गिरता गया। भगवान पार्श्वनाथ का जीवन बताता है अच्छाई का फल अच्छा होता है और कमठ का जीवन बताता है बुराई का फल बुरा होता है। भगवान पार्श्वनाथ ने अपने पवित्र आचरण से बताया जीव का स्वभाव समता है, विषमता नहीं। उनकी समता कष्ट सहिष्णुता को सारे संसार ने सराहा तथा उन्हें अपना आदर्श माना। इसलिए आज भारत सहित सम्पूर्ण देश वा विदेश के सभी जिनालयों में सर्वाधिक भगवान पार्श्वनाथजी की प्रतिमायें विराजमान हैं। श्रावकों ने आचार्यों की प्रेरणा से उनकी प्रतिमा विराजमान की तो अनेक आचार्यों, मुनियों, भट्टारकों व कवियों ने उनके जीवन चरित्र को अनेक पुराण ग्रन्थों, कथा, नाटक, कविता–स्तोत्र व

पूजा में लिपिबद्ध किया। सबने अपनी शैली में भगवान का गुणानुवाद किया। भगवान पार्श्वनाथ के नाम से अनेक व्रत भी किये जाते हैं। उनमें रविव्रत व मुकुट सप्तमी व्रत विशेष हैं। सम्पूर्ण देश में सर्वाधिक प्रचलित व्रत रविव्रत है। रविव्रत भी अहंकारी के अहंकार को तोड़ने वाला और धनहीन को धनवान, दुःखियों को सर्वसुखी बनाने वाला व्रत हैं। इसकी कथा से हम व्रत के सम्पूर्ण रहस्य को जान सकते हैं। रविव्रत पर भी संस्कृत व हिन्दी में अनेक विधान देखने को मिलते हैं। इसी रविव्रत पर हमारी संघस्था आर्यिका आस्थाश्री माताजी ने भी एक सुन्दर सारगर्भित स्वतंत्र रविव्रत विधान बनाया है। रविव्रत के 9 वर्ष के 9 वलयों के अर्घ में माताजी ने अपने ढंग से भगवान पार्श्वनाथ की भक्ति की है। साथ में हम प्रभु भक्ति कितने द्रव्यों से, कितने प्रकार से कर सकते हैं। यह संदेश भी विधान के अनेक छन्दों में दिया है।

इसमें 81 अर्घ व कुछ पूर्णार्घ है इस विधान में उन्होंने, दोहा, काव्य, शम्भु, सखी, नरेन्द्र, चौपाई, गीता आदि अनेक छन्दों का प्रयोग किया है। पूरा विधान सरल, सहज सुन्दर है।

नंदीश्वर विधान और भी अनेक विधानों की रचना की है व महासती चन्दना, सती मनोरमा आदि अनेक कथा साहित्य का भी सृजन किया है। एक साथ **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, मोक्षशास्त्र, णमोकार, एकीभाव, चंदन षष्ठी विधान'** ये आठ विधान संयुक्त रूप में प्रकाशित होने जा रहे हैं। इन विधानों में माताजी ने शंभु, गीता, नरेन्द्र, जोगीरासा, कुसुमलता, चौपाई, अवतार, सखी, काव्य, दोहा, सोरठा, अडिल्ल, रोला, धत्ता, त्रिभंगी आदि अनेक छंदों का सुन्दर ढंग से प्रयोग किया है। मूल में **सोमसेनाचार्य व अभयनंदी आचार्य** ने प्राकृत व संस्कृत भाषा में सोलहकारण व दशलक्षण विधान की रचना की है व हिन्दी में **रईधु कवि** के दोनों विधान है। उन्हीं को आधार बनाकर वर्तमान भाषा शैली में नये ढंग से सरल छन्दों में, सुलझे सरस शब्दों में माताजी ने बहुत ही सुन्दर रचना की है।

विधान लेखन के क्षेत्र में माताजी का रचना धर्म अत्यन्त सराहनीय, प्रशंसनीय है। इसके साथ माताजी ने एकीभाव व णमोकार विधान आदि अनेकों की भी रचना की है, जो प्रकाशित हो गये हैं।

आपकी यह लेखनी अनवरत चलती रहे एवं यही श्रुत साधना, केवलज्ञान की प्राप्ति में कारण बने, यही उनके लिए आशीर्वाद है।

ग्रन्थ के प्रकाशक, मुद्रक व पूजक सभी को शुभाशीर्वाद।

–आचार्य गुप्तिनन्दी

नंदीश्वर द्वीप की महिमा

इस ढ़ाई द्वीप के अंदर दो समुद्र और ढ़ाई द्वीप हैं तथा इस मध्यलोक में असंख्यात द्वीप समुद्र हैं। सभी जगह जिन चैत्यालय नहीं है। वैसे मध्यलोक में अकृत्रिम चैत्यालय 458 बताये हैं। किसी द्वीप में अकृत्रिम चैत्यालय हैं और किसी द्वीप में नहीं है। किसी द्वीप में अधिक चैत्यालय हैं, किसी द्वीप में कम संख्या में है।

मध्यलोक के द्वीपों में सबसे अधिक पूजा-पाठ का महत्त्व नंदीश्वर द्वीप का है। इस नंदीश्वर द्वीप में भगवान की पूजा-अर्चा करने चारों निकाय के देव अष्टाह्निका पर्व के समय में आते हैं। वर्ष में तीन बार सौधर्म आदि इन्द्रगण अपने परिवार देवों के साथ वहाँ महापूजा करते हैं। वे चारों दिशाओं में पूजा करते हैं। अलग-अलग समय पर अलग-अलग देवगण पूजा करते हैं। 24 घंटे अखंड रूप से वहाँ पूजा होती है।

कार्तिक, फाल्गुन, आषाढ़ मास में अष्टाह्निका पर्व आता है। तीनों मास की शुक्ल पक्ष की अष्टमी से पूर्णिमा तक अष्टाह्निका मनाई जाती है। आठ दिन की अष्टाह्निका होती है।

इस नंदीश्वर द्वीप में 52 चैत्यालय है। हर एक चैत्यालय में 108, 108 जिन प्रतिमायें होती हैं, नाना रत्नों की ये जिन प्रतिमायें 500 धनुष ऊँची होती

है। चारों दिशाओं में 13-13 चैत्यालय होते हैं और 13+13+13+13=52 चैत्यालय होते हैं।

एक-एक दिशा में एक अञ्जनगिरि, चार दधिमुख, आठ रतिकर होते हैं। इन्हीं के ऊपर 13 चैत्यालय होते हैं। चारों दिशाओं में एक-एक वापिका है, प्रत्येक दिशा में एक-एक वन है। इस प्रकार एक दिशा में एक अञ्जनगिरि की चार वापिकाओं सम्बन्धी 16 वन है। चारों दिशाओं के 64 वन है और प्रत्येक वन में एक-एक प्रासाद है।

देवगण-नाना प्रकार के फल, फूलों को लेकर अपने-अपने वाहन पर आरुढ़ होकर पूजा करने जाते हैं।

मनुष्य, विद्याधर और चारण ऋद्धिधारी मुनिराज ढ़ाई द्वीप से बाहर इस नंदीश्वर द्वीप में नहीं जा सकते हैं। इसलिये हम सभी यहीं से परोक्ष रूप में उस नंदीश्वर द्वीप के चैत्यालय की द्रव्य और भाव से महार्चना करते हैं। जिनालयों में इसलिये नंदीश्वर भगवान की चौमुखी प्रतिमा विराजमान की जाती है।

मुनिराज नंदीश्वर भक्ति पढ़ते हैं और श्रावकगण नंदीश्वर द्वीप की पूजा, विधान आदि करके पुण्य का संचय करते हैं।

यह नंदीश्वर विधान **'तिलोयपण्णत्ति'** के आधार से लिखा है। नंदीश्वर द्वीप के विषय में अधिक विस्तार से जानने के लिये 'तिलोयपण्णत्ति' का अध्ययन करें। ये 'तिलोयपण्णत्ति' यतिवृषाचार्य के द्वारा लिखा हुआ है। नंदीश्वर द्वीप का वर्णन 'तिलोयपण्णत्ति' के तीसरे भाग में है। वहाँ से पढ़ें और नंदीश्वर द्वीप की लम्बाई विस्तार आदि जाने।

वहाँ पे जो अञ्जनगिरि है वह इन्द्र नीलमणि के समान है। दधिमुख- दही के समान है। रतिकर- स्वर्ण के समान है।

सबसे अधिक पूजा इस नंदीश्वर द्वीप में होती है, एक बार ही नहीं। आचार्य कहते हैं कि वर्ष में तीन बार महार्चना होती है।

मैंने जब 'तिलोयपण्णत्ति' के तीसरे भाग में नंदीश्वर द्वीप की महिमा पढ़ी। उसमें देवों के द्वारा जो पूजा पढ़ी तो मेरे भाव विधान बनाने में लगे। पंचमेरु का विधान लिखा तब से नंदीश्वर विधान बनाने की इच्छा थी। जब हरिवंशपुराण का

स्वाध्याय किया उसमें भी नंदीश्वर द्वीप का वर्णन पढ़कर मन में बड़ा आनंद हुआ।

इस नंदीश्वर द्वीप का कितना महत्त्व है। 'तिलोयपण्णत्ति' में चतुर्णिकाय के देव अलग-अलग फूल, फलों को लेकर नंदीश्वर द्वीप में पूजा करने जाते हैं। बहुत ही सुन्दर वर्णन तीसरे भाग में दिया है। एक बार अवश्यमेव सब भक्त 'तिलोयपण्णत्ति' का स्वाध्याय करें। तीन लोक में कहाँ पर क्या बना है? कितनी संख्या में है, लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई आदि सब कुछ जानने के लिये हमें अवश्य पढ़ना चाहिये।

इस विधान में 52 अर्घ है। 6 पूर्णार्घ है। इसका व्रत वर्ष में तीन बार उत्तम, मध्यम, जघन्य रूप से होता है। व्रत की विधि, व्रत की कथा पढ़कर समझे।

श्री नन्दीश्वर विधान अष्टाह्निका में आठ दिनों तक करना चाहिये। इसलिये ये चार पूजायें ही दो बार करना चाहिये।

नंदीश्वर विधान का माण्डला

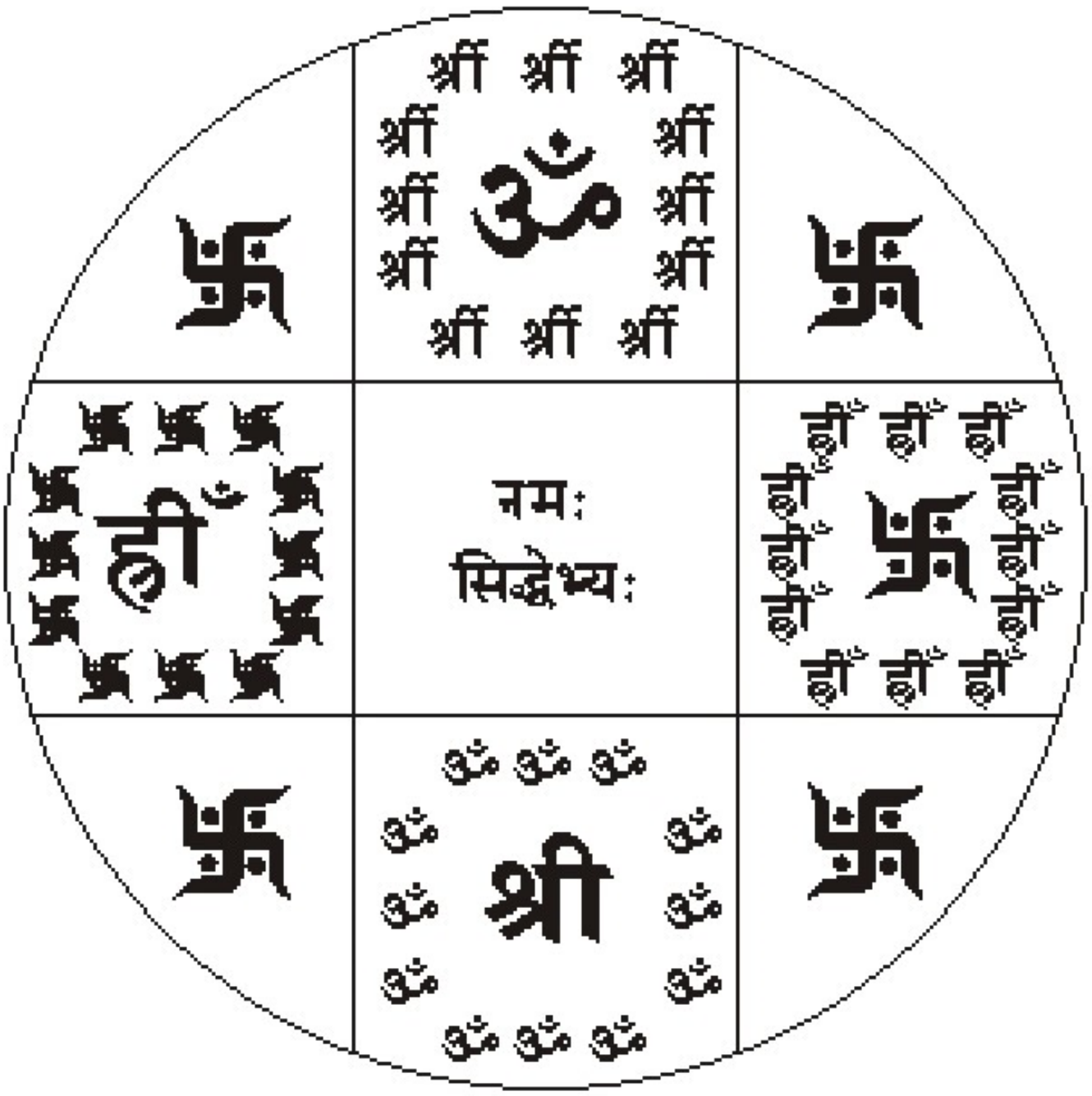

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– **रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।**
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे।।

3

2 卐 24

5

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ।।1।।

केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत् अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत् उपकार।।2।।

धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास।।3।।

कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल।।4।।

चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष।।5।।

प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय।।6।।

हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार॥7॥

बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार॥8॥

हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग-द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान॥9॥

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म॥10॥

चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश॥11॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें।।1।।

सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो।।2।।

अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी।।3।।

महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता।।4।।

परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन-वच-काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता।।5।।

अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी।।6।।

जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता।।7।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो॥
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को॥1॥

त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥2॥

अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है॥
त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है॥3॥

पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है॥
शुचि परमातम का अवलम्बन, आतम को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है॥4॥

अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है॥

प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी॥1॥

सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी॥2॥

पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी॥3॥

विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी॥4॥

कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी॥5॥

नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।2।।

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।3।।

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणोंमें।।4।।

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।5।।

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।6।।

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।7।।

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।8।।

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।9।।

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।10।।

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज– हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों।।
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा।।
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन–माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म–जरा–मृत हरता हूँ।।
देव–शास्त्र–गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना।। देव शास्त्र..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ।। देव शास्त्र..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ।।
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।4।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया।। देव शास्त्र..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा।। देव शास्त्र..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ।। देव शास्त्र..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है।। देव शास्त्र..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है।। देव शास्त्र..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोड़ूँ सब अभिमान।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय–जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर–नार।।

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ।।
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ।।1।।

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ।।
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि–सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले।।2।।

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत–शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन।।
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन।।3।।

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता।।

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा।।4।।

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन।।
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर।।5।।

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन।।
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी।।6।।

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन।।7।।

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें।।
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा

रचनाकार–आचार्य गुप्तिनंदीजी

(गीता छन्द)

वृषभादि से वीरान्त तक है सर्व जिन की अर्चना।
हरती हमारे पाप तम और क्लेश की सब वंचना।।
त्रय रत्न गुणधर तीर्थकर की पुष्प लेकर थापना।
प्रभु का परम सान्निध्य पा हम दुःख मिटाये आपना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अडिल्ल छन्द)

निर्मल जल हम कंचन झारी में भरें।
जिनवर के चरणों में त्रय धारा करें।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्दन सम शीतल चन्दन अर्पण करें।
जिनवर की अर्चा भव का वर्तन हरे।। जिन शासन...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता और अक्षत मुष्ठि में भर लिये।
अक्षय सुखदाता को अर्पण कर दिये।। जिन शासन...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अम्बुज भूमिज मनहर सुरभित सुमन से।
मदनजयी को पूजे निज मन्मथ नशे।। जिन शासन...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर प्रासुक व्यञ्जन से अर्चना।
परम कृपालु हरें क्षुधा की वंचना।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर दीपों से करते आरती।
जिनवर वाणी केवल दीप उजालती।। जिन शासन...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हितकर मनहर धूप चढ़ायें नाथ को।
कर्म विनाशन हेतु झुकायें माथ को।। जिन शासन...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर केला आदि फल ला रहे।
मुक्ति फल दाता के चरण चढ़ा रहे।। जिन शासन...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फल आदि अर्घ बनाये भाव से।
अनर्घ पद हित भक्ति रचायें चाव से।। जिन शासन...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रभु को लख प्रमुदित हुआ, मन में हर्ष अपार।
तन मन को शांति मिले, करता शांतिधार।।

शांतये शांतिधारा...

प्रभु चरणों के पास में, अर्पित करते हार।
संयम के सौरभ खिले, पायें शिवपुर द्वार।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्....

जाप्य मन्त्र-ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा – आदिनाथ से वीर तक चौबीसों भगवान।
उनकी जयमाला पढ़ें होवें सिद्ध समान।।

चौपाई

वृषभ धर्म वृषभेश बतायें, अजित कर्म अरि पर जय पायें।
संभव भव का भ्रमण छुड़ायें, अभिनंदन सुरवंद्य कहाये।।1।।

सुमति जिनेश सुमति के दाता, चित्त पद्म के पद्म विधाता।
श्री सुपार्श्व भव पाश हरेंगे, 'चन्द्र' चित्त में वास करेंगे।।2।।

पुष्पदंत को पुष्प चढ़ायें, शीतल अंतस्तल बस जायें।
श्री श्रेयांस श्रेय के दाता, वासुपूज्य वसु कर्म विघाता।।3।।

विमल कर्म मल दूर भगायें, जिन अनंत शक्ति प्रगटायें।
धर्मनाथ दशधर्म सिखायें, शांति जगत में शांती लायें।।4।।

कुंथु से कुंथ्वादिक रक्षा, अरहनाथ की श्रेष्ठ विवक्षा।
मल्लि कर्म मल्लों को जीते, मुनि सुव्रत व्रत अमृत पीते।।5।।

नमि को नमे सकल नर नारी, नेमि तजे राजुल सुकुमारी।
पारस के हम पार्श्व रहेंगे, वर्द्धमान को नमन करेंगे।।6।।

चौबीसों तीर्थेश हमारे, पंचकल्याणक जिनके न्यारे।
'गुप्तिनंदी' प्रभु के गुण गाये, तीन गुप्ति धर शिव सुख पाये।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

चौबीसों जिनदेव को, वंदन बारम्बार।
उनकी पूजा भक्ति से, मिले मोक्ष प्राकार।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो सव्व साहूणं

(णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।)

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर* पूजन विधान

अथ स्थापना (शंभु छंद)

ये द्वीप आठवाँ नन्दीश्वर, शाश्वत अतिशय सुखकारी है।
इनके बावन चैत्यालय की, प्रतिमायें सब मनहारी हैं।।
कर युग में सुन्दर सुमन लिये, हम अभिनंदन करने आये।
शत इन्द्रों से पूजित प्रभु की, पूजा कर हम शिवसुख पायें।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमा-समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ:-ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

कलशों में नीर लेके भक्त ईश को ध्यायें।
त्रय रोग नशाने प्रभु को नीर चढ़ायें।।
बावन जिनालयों के चैत्य की महार्चना।
हम श्री जिनार्चना से नशें कर्म वंचना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व-पश्चिमोत्तर-दक्षिण दिक्षु द्वि-पंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक जिनालय में बिम्ब इक सौ आठ हैं।
उनको चढ़ायें गंध आज ठाठ-बाट से।। बावन... ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व-पश्चिमोत्तर-दक्षिण दिक्षु द्वि-पंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

वो मूर्तियाँ अनादि निधन रत्न से बनीं।
मोती एवं तन्दुलों से उनको पूजते गुणी।। बावन... ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व-पश्चिमोत्तर-दक्षिण दिक्षु द्वि-पंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

---

* श्री नन्दीश्वर विधान अष्टाह्निका में आठ दिनों तक करना चाहिये। इसलिये ये चार पूजायें ही दो बार करना चाहिये।

अतिशय से युक्त नाथ को हम पुष्प चढ़ायें।
निज कामबाण नाश हेत पूजने आये।।
बावन जिनालयों के चैत्य की महार्चना।
हम श्री जिनार्चना से नशें कर्म वंचना।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व–पश्चिमोत्तर–दक्षिण दिक्षु द्वि–पंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमाभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर जलेबी मालपुआ रबड़ी कचौड़ी।
हम नाथ को चढ़ायें आज शुद्ध पकौड़ी।। बावन... ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व–पश्चिमोत्तर–दक्षिण दिक्षु द्वि–पंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमाभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये द्वीप रत्न दीप से सदा ही जगमगे।
करके प्रभु की आरती मोहान्धतम भगे।। बावन... ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व–पश्चिमोत्तर–दक्षिण दिक्षु द्वि–पंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमाभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

उन मन्दिरों में महक उठे धूप गंध की।
हम धूप चढ़ाके नशायें कर्म बंदगी[1]।। बावन... ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व–पश्चिमोत्तर–दक्षिण दिक्षु द्वि–पंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमाभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हर एक ऋतु के फलों की थाल सजायें।
पाने सुमोक्ष हम प्रभु के चर्ण चढ़ायें।। बावन... ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व–पश्चिमोत्तर–दक्षिण दिक्षु द्वि–पंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमाभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! अष्ट द्रव्य को स्वीकार कीजिये।
संसार के दुःखों से हमें तार दीजिये।। बावन... ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व–पश्चिमोत्तर–दक्षिण दिक्षु द्वि–पंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. दासता।

चारों दिशाओं की पूजा के पूर्णार्घ

(नरेन्द्र छंद)

अंजनगिरि दधिमुख रतिकर पे, तेरह मंदिर न्यारे।
पूरब दिश के इन जिनगृह में, सिद्ध प्रभु मनहारे।।
शाश्वत अकृत्रिम चैत्यों को, हम सब अर्घ चढ़ायें।
नंदीश्वर के बावन प्रभु को, हम सब शीश नवायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

नंदीश्वर दक्षिण अंजन गिरि, उस गिरि पे दधिमुख चार कहे।
रतिकर पर्वत विदिशाओं में, कुल पर्वत प्रभु ने आठ कहे।।
तेरह जिनमंदिर वहाँ कहे, उत्तम शिखरों पे ध्वज फहरे।
हम भी उनको निशदिन पूजें, वो भव्य जनों का चित्त हरे।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

नंदीश्वर के पश्चिम दिश में, उन्नत गिरी अंजन हैं।
वहाँ प्रतिष्ठित प्रतिमाओं का, शत्-शत् अभिवंदन हैं।।
दधिमुख पर्वत की विदिशा में, रतिकर आठ कहे हैं।
तेरह चैत्यालय को हम सब, निशदिन पूज रहे हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

द्वीप आठवाँ नंदीश्वर ये, उत्तर दिश सुखकारी।
रतिकर दधिमुख अंजनगिरि के, मन्दिर मंगलकारी।।

तेरह जिन चैत्यालय को हम, अर्घ पवित्र चढ़ायें।
उनके शाश्वत जिनबिम्बों को, हम सब शीश झुकायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांतिधारा हम करें, जिन पद नीर चढ़ाय।
नन्दीश्वर के सब प्रभो, समता शांति दिलाय।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– वकुल मालती मोगरा, नील कमल कचनार।
अभिनन्दन प्रभु आपका, भव्य करें मनहार।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा– नन्दीश्वर शुभ द्वीप की, गायें हम जयमाल।
पुष्पों की माला चढ़ा, पायें जिनगुण माल।।

(नरेन्द्र छंद)

नमस्कार है जिन प्रतिमा को, नमस्कार नंदीश्वर को।
नमस्कार बावन चैत्यों को, नमस्कार हो जिनवर को।।
नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, जग में मंगलकारी है।
सर्व सुरासुर से पूजित जिन, रत्नमयी मनहारी हैं।।1।।

पर्व अठाई एक वर्ष में तीन बार नित आता है।
कार्तिक फागुन षाढ मास में, पर्व मनाया जाता है।।
नन्दीश्वर में जाकर सुरगण, पूजा–पाठ रचाते हैं।
आठ दिवस तक वे सब मिलकर, उत्सव वहाँ मनाते हैं।।2।।

द्वीप आठवें नंदीश्वर में, मनुज नहीं जा पाते हैं।
वो परोक्ष में जिनमंदिर में, पूजा कर सुख पाते हैं।।
बावन हैं इसमें चैत्यालय, रत्नमयी सब प्रतिमायें।
सब मन्दिर में अष्टोत्तर शत, राजे श्री जिन प्रतिमायें।।3।।

दधिमुख रतिकर अंजनगिरी के, बावन जिन चैत्यालय हैं।
ऊँचे-ऊँचे मन्दिर सारे, भव्यों को सौख्यालय हैं।।
प्रतिमा हमसे भले दूर हो, फिर भी फल वो देती है।
उनकी पूजा हर पूजक के, दुःख संकट हर लेती है।।4।।

अष्टाह्निक में आठ दिवस तक, भव्य विधान रचाते हैं।
रत्नचूर्ण का रंग बिरंगा, मण्डल भव्य बनाते हैं।।
श्रीफलादि में ध्वजा लगाकर, प्रभु को अर्घ चढ़ाते हैं।
प्रभु पूजा के फल से क्रमशः, मोक्षपुरी को पाते हैं।।5।।

बेला तेला या एकाशन, अनशन जो जन करते हैं।
अष्ट करम से मुक्ति पाकर, अष्टम् भू वो वरते हैं।।
चारण ऋद्धिधारी मुनिगण, प्रभु का ध्यान लगाते हैं।
'आस्था' रखकर त्रय गुप्ति पा, मोक्ष सम्पदा पाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्वि-पंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें।।
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिश जिनालय पूजा विधान

अथ स्थापना (शंभु छंद)

नन्दीश्वर के पूरब दिश में, तेरह चैत्यालय श्रुत गाये।
अतिशय युत ये जिनगृह सुन्दर, हम भक्तों के मन बस जायें॥
उनका प्रत्यक्ष महा अर्चन, श्रद्धा से सुरगण करते हैं।
हम भी परोक्ष आह्वान करें, सब चैत्यालय को भजते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

गंगा नदी का शुचि नीर लिये, श्री जिनवर का प्रक्षाल करें।
जिन प्रतिमा की सम्यक् अर्चा, मम जन्म जरादिक रोग हरे॥
नंदीश्वर के पूरब दिश में, शाश्वत तेरह चैत्यालय हैं।
हम उनकी भक्ति विधान रचा, जायेंगे मोक्ष सुखालय में॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गोशीर्ष तगर चन्दन घिस हम, जिनवर को आज चढ़ाते हैं।
प्रभु की पावन पग रज ले हम, श्रद्धा से शीश लगाते हैं॥ नंदीश्वर..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उन चैत्यालय की प्रतिमायें, सब रत्नमयी सुन्दर प्यारी।
रत्नों के अक्षत पुंज-चढ़ा, हम भक्ति करें अतिशयकारी॥ नंदीश्वर..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जो स्वयं पुष्प की माल बना, प्रभुवर को अर्पण करते हैं।
वो मालामाल बनें जग में, सुख वैभव शांति वरते हैं।।
नंदीश्वर के पूरब दिश में, शाश्वत तेरह चैत्यालय हैं।
हम उनकी भक्ति विधान रचा, जायेंगे मोक्ष सुखालय में।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पन प्रकार के व्यंजन से, बावन चैत्यालय को पूजें।
यह क्षुधारोग नश जाये प्रभु, इस कारण हम निशदिन पूजें।। नंदीश्वर..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों प्रकार के देव सभी, दिन-रात नाथ को भजते हैं।
हम भी दीपक लेकर पूजें, मिथ्यात्व मोह को तजते हैं।। नंदीश्वर..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पावक में धूप चढ़ाने से, मंदिर सुरभित हो जाता है।
जिन अर्चा में जब भाव लगे, जीवन सुरभित हो जाता है।। नंदीश्वर..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आमादि चढ़ा कीर्त्तन करते, वाद्यों की मंगल ध्वनि बजे।
श्रीफल कदली व गन्ने से, जिनवर के मंडप पूर्ण सजें।। नंदीश्वर..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर में सुर ताल विशेष मिला, सुर देव-देवियाँ नृत्य करें।
वसुविध द्रव्यों की थाल चढ़ा, हम भी जिनवर की भक्ति करें।। नंदीश्वर..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व दिशागत चैत्यालय के 13 अर्घ

दोहा– पूर्व दिशा के नाथ को, पूजूँ मन वच काय।
तेरह जिनगृह चैत्य को, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय।।

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(अडिल्ल छंद)

नन्दीश्वर की पूर्व दिशा में आइये।
अंजनगिरि के चैत्यालय को ध्याइये।।
सिद्ध जिनालय इस पर्वत की शान है।
इस पर्वत पे शोभे श्री भगवान हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी अंजनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि की चउ दिश जग में वंद्य हैं।
चार सरोवर कुमद कमल से रम्य है।।
पूरब नंदा वापी दधिमुख शैल है।
प्रभु को पूजें छूटे कर्मन् जैल से।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदावापिका मध्य स्थित दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दधिमुख दही सम श्वेत वर्ण का जानिये।
'नन्दवती' वापी दक्षिण में मानिये।।
चारों दिश में वृक्ष आदि फूलें फलें।
हम भी प्रभु को पूजें और फूलें फलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदवती वापिका मध्य स्थित दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश की वापी है 'नन्दोत्तरा'।
एक लाख योजन शाश्वत विस्तृत अहा।।
दधिमुख नग पे जिन चैत्यालय एक है।
अर्घ चढ़ा हम चरणों में सिर टेकते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदोत्तरावापिका मध्य स्थित दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस हजार योजन दधिमुख पर्वत कहा।
उत्तर दिश 'नंदीघोषा' वापी जहाँ।।
रत्नमयी जिनबिम्ब यहाँ हैं स्वर्ण के।
अर्घ सजा लाये हम नाना वर्ण के।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदिघोषा वापिका मध्य स्थित दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदा द्रह ईशान कोण रतिकर वहाँ।
उसके ऊपर रत्नों का मंदिर अहा।।
रतिकर पर्वत स्वर्ण वर्ण का जानिये।
प्रभु पूजा से शिव सुख मिलता मानिये।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदावापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नंदा' द्रह आग्नेय दिशा में ध्याइये।
त्रिभुवन पति की पूजा से सुख पाइये।।
रतिकर पर्वत इक हजार योजन महा।
वहाँ विराजे प्रभु को हम पूजें यहाँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदावापी आग्नेयकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निकोण में 'नंदवती' वापी कही।
रतिकर पे जिनमंदिर रत्न मणीमयी।।
लोकपूज्य तहँ सिद्ध बुद्ध परमात्मा।
उनको पूजें बनने हम सिद्धात्मा।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदवती वापी आग्नेयकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नंदवती' द्रह नैऋत्य कोण सुहावनी।
नाना रत्नों की प्रतिमा मन भावनी।।

उन्हें पूजने आते नित सुर देवता।
निज समकित को दृढ़ करते वे देवता।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदावापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदोत्तर वापी पे रतिकर तुंग है।
नैऋत्य दिश में जिन प्रतिमायें तुंग हैं।।
सुर वनितायें मंगल नृत्य वहाँ करें।
अर्घ चढ़ा प्रभु को हम भी शिवसुख वरें।।10।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदोत्तरावापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार निकायों के सुर नित आते यहाँ।
चँवर ढुरायें भक्ति रचायें वो अहा।।
पवन दिशा में वापी है नंदोत्तरा।
अर्घ चढ़ायें हे भगवन् ! हमको तिरा।।11।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदोत्तरावापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवन दिशा में नंदीघोषा वापिका।
कमल वनों से शोभित हर इक वाटिका।।
वज्रमयी ये पर्वत नीचे गोल हैं।
प्रभु पूजा में भक्त बजाते ढ़ोल हैं।।12।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदिघोषावापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीघोषा वापी है ईशान में।
रतिकर नग पे बड़े-बड़े भगवान हैं।।
शाश्वत अनुपम जिनमंदिर मन भा रहे।
पूजा करने हम जिनमंदिर जा रहे।।13।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदिघोषावापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

अंजनगिरि दधिमुख रतिकर पे, तेरह मंदिर न्यारे।
पुरब दिश के इन जिनगृह में, सिद्ध प्रभु मनहारे।।
शाश्वत अकृत्रिम चैत्यों को, हम सब अर्घ चढ़ायें।
नंदीश्वर के बावन प्रभु को, हम सब शीश नवायें।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

यह द्वीप शाश्वत आठवाँ, इसकी करें हम वन्दना।
भव-भव दुःखों का नाश हो, इस हेतु करते अर्चना।।
जिनवर गुणों की प्राप्ति हित, हम शांतिधारा कर रहे।
'आस्था' करें गुप्ति धरें, पुष्पाञ्जलि हम कर रहे।।

शांतये शांतिधारा।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं।।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- दर्शन हमको दीजिए, नंदीश्वर के नाथ।
हमें शरण में लीजिए, तुम्हें नमावें माथ।।

(शंभु छंद)

जय नंदीश्वर जय नंदीश्वर, इसकी जयमाला हम गायें।
यह द्वीप आठवाँ नंदीश्वर, यह मध्यलोक में ही आयें।।
यह वसुधा कितनी पावन है, जिस भू पे इतने चैत्य बनें।
शाश्वत अकृत्रिम रत्नमयी, बावन जिनगृह अभिराम बनें।।1।।
नंदीश्वर के चारों दिश में, तेरह-तेरह चैत्यालय हैं।
अंजनगिरि दधिमुख रतिकर पे, शुभ रत्नमयी देवालय हैं।।

यह इन्द्रनील मणियों वाले,चौरासी सहस ऊँचाई है।
सब तरफ गोल हैं इक समान, चूड़ी जैसी गोलाई है।।2।।
इस गिरि पे चार वापियाँ हैं, योजन इक लाख कहीं सारी।
जलपूर्ण वापियों के अंदर, कमलादि खिले हैं मनहारी।।
चारों द्रह की चारों दिश में, उद्यान बने सुन्दर-सुन्दर।
अशोक आम और सप्त छंद, चंपादि लगे सबको सुन्दर।।3।।
वापी के मध्य भाग में ही, पर्वत दधिमुख दधि सम सोहे।
योजन हजार दस ऊँचा ये, सुर ललनाओं का मन मोहे।।
वापी के दोनों कोने में, रतिकर पर्वत ये आठ कहे।
जो इनकी पूजा-पाठ करे, उनके घर में नित ठाठ रहे।।4।।
योजन हजार चौड़े ऊँचे, रतिकर पर्वत हैं स्वर्णमयी।
सब शैल स्वर्ण के बने हुये, इनमें प्रतिमायें रत्नमयी।।
वैभव युत ये तेरह मंदिर, ये निलय शिखर युत बतलाये।
उन पर हैं स्वर्ण कलश सुन्दर, ध्वज उनकी कीर्ति फैलाये।।5।।
इस नंदीश्वर के दर्शन को, केवल सुरगण ही जा सकते।
साक्षात् प्रभु के दर्शन से, सम्यक्त्व निधि वो पा सकते।।
हम भी परोक्ष में पूजा कर, पूजा का उत्तम फल पायें।
'आस्था' से नमन करें प्रभु को, भवसागर से हम तिर जायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें।।
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिश जिनालय पूजा विधान

अथ स्थापना (दोहा)

द्वीपों में यह आठवाँ, नंदीश्वर है धाम।
दक्षिण दिश के चैत्य का, करता मैं आह्वान।।
अकृत्रिम जिनबिम्ब ये, रत्नमयी भगवान।
तेरह चैत्यालय बनें, उनको करूँ प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

प्रभुवर का अभिषेक करूँगा, बड़े-बड़े कलशों से।
वो ही न्हवन बने गंधोदक, ॐ ह्रीं मंत्रों से।।
मंत्रित उस गंधोदक को मैं, अपने शीश लगाऊँ।
नंदीश्वर के चैत्यालय की, पूजन कर हर्षाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव का ताप नशाने वाला, चंदन घिसकर लाऊँ।
केशर में कर्पूर मिलाकर, प्रभु के चरण चढ़ाऊँ।।
प्रभु चरणों की पावन रज का, सिर पर तिलक लगाऊँ।। नंदीश्वर..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नवरंगों के माणिक मोती, रंग-बिरंगे लाऊँ।
अक्षयपद के धारी भगवन्, अक्षय पद मैं पाऊँ।।
अक्षयपद को पाने हेतु, अक्षत पुंज चढ़ाऊँ।। नंदीश्वर..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पत्र और फूलों का मैंने, तोरणद्वार बनाया।
विविध वर्ण के गुलदस्तों से, मंदिर आज सजाया।।
पुष्पहार अर्पण कर भगवन्, काम अरि विनशाऊँ।
नंदीश्वर के चैत्यालय की, पूजन कर हर्षाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मण्डल के चारों कोने पे, इक्षुदण्ड लगाये।
कदली खंब व पुष्पमाल से, तोरणद्वार बनाये।।
पय घृत के सुस्वादु व्यञ्जन, प्रभुवर तुम्हें चढ़ाऊँ।। नंदीश्वर..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब होता मंदिर में उत्सव, तब-तब मने दिवाली।
करें आरती नंदीश्वर की, बजा-बजा कर ताली।।
घृत कपूर के दीप जलाकर, मंदिर खूब सजाऊँ।। नंदीश्वर..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

एक-एक चैत्यालय पे सुर, पूजन भव्य रचायें।
सुरभित धूप चढ़ाकर प्रभु को, अपने कर्म नशायें।।
नंदीश्वर के जिनबिम्बों को, घट में धूप चढ़ाऊँ।। नंदीश्वर..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वर के दक्षिण दिश में, जिनमन्दिर मनहारे।
सोने का श्रीफल लेकर के, भक्त चढ़ायें सारे।।
तेरह विध चारित को पालूँ, महामोक्ष फल पाऊँ।। नंदीश्वर..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा के स्वामी को, अष्ट द्रव्य से पूजूँ।
भक्ति के रस में रम जाऊँ, कर्म बंध से छुटूँ।।
राग-द्वेष के द्वंद फंद से, छुटकारा मैं पाऊँ।।
नंदीश्वर के चैत्यालय की, पूजन कर हर्षाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिशागत चैत्यालय के अर्घ

दोहा- दक्षिण के जिन चैत्य पे, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय।
तेरह जिनगृह पूजने, सुर नंदीश्वर जाय।।

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(अवतार छंद)

नंदीश्वर दक्षिण माय, अंजन तुंग महा।
इन्द्रादि देवगण आय, मंदिर भव्य जहाँ।।
नानाविधि लेके द्रव्य, सुरगण आते हैं।
पूजा करते अति भव्य, पुण्य कमाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अंजनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि पूरब ज्येष्ठ, 'अरजा' वापि बहे।
वापीमधि दधिमुख श्रेष्ठ, इसपे चैत्य कहे।। नानाविधि..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अरजावापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिश अंजन तुंग, 'विरजा' द्रह होवे।
जिनमंदिर शिखर उतुंग, दधिमुख पे सोहे।। नानाविधि..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि विरजावापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है वापी अशोका नाम, पश्चिम दिश प्यारी।
दधिमुख ऊपर भगवान, सबको सुखकारी।।
नानाविधि लेके द्रव्य, सुरगण आते हैं।
पूजा करते अति भव्य, पुण्य कमाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अशोकावापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी गतशोका होय, उत्तर दिश अंजन।
दधिमुख पे जिनवर होय, उनको है वंदन।। नानाविधि..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोका वापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

रतिकर पर्वत है स्वर्णमयी, औ बाह्य कोण में वापी के।
ईशान कोण में 'अरजा द्रह', जिनमंदिर है इस वापी में।।
हैं रत्नमयी सब चैत्यालय, उनमें रत्नों की प्रतिमायें।
सुर किन्नर से वंदित प्रभु की, पूजा कर हम भी हर्षायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अरजा वापिका ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अग्निकोण 'अरजा' वापी, रतिकर सोने सा चमक रहा।
रत्नों की जिन प्रतिमाओं से, इन्द्रों का मन भी दमक रहा।। है..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अरजा वापिका आग्नेय कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रतिकर नग की मणिमय प्रतिमा, सब धनुष पाँच सौ ऊँची हैं।
आग्नेय दिशा विरजा वापी, कहती जिनवाणी सच्ची है।। है ..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि विरजा वापिका आग्नेय कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है कनक शैल रतिकर सुन्दर, विरजा वापी नैऋत्य दिशा।
दिन-रात प्रभु को सुर पूजें, फेरी करते वो सर्व दिशा॥
हैं रत्नमयी सब चैत्यालय, उनमें रत्नों की प्रतिमायें।
सुर किन्नर से वंदित प्रभु की, पूजा कर हम भी हर्षायें॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि विरजा वापिका नैऋत्य कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ नाम अशोका वापिका, भक्तों के शोक मिटाती है।
रतिकर की रत्नमयी प्रतिमा, नैऋत्य दिशा में आती है॥ है ..॥10॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अशोका वापिका नैऋत्य कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायव्य कोण रतिकर वापी, है नाम अशोका मनहारी।
चामी[1] नग[2] पे सुन्दर मन्दिर, उनकी पूजा मंगलकारी॥ है ..॥11॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अशोका वापिका वायव्य कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है नाम वीतशोका जिसका, वायव्य कोण के रतिकर पे।
नाना रत्नों की प्रतिमायें, जिनभक्तों को अति रुचिकर हैं॥ है ..॥12॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोका वापिका वायव्य कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमलों से सुरभित वापी ये, हे नाम वीतशोका जिसका।
ईशान दिशि विस्तृत मंदिर, वर्णन नहीं कर सकते जिसका॥ है ..॥13॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोका वापिका ईशान कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

नंदीश्वर दक्षिण अंजन गिरि, उस गिरि पे दधिमुख चार कहे।
रतिकर पर्वत विदिशाओं में, कुल पर्वत प्रभु ने आठ कहे॥

1. स्वर्णमयी, 2. पर्वत।

तेरह जिनमंदिर वहाँ कहें, उत्तम शिखरों पे ध्वज फहरे।
हम भी उनको निशदिन पूजें, वो भव्य जनों का चित्त हरे।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

यह द्वीप शाश्वत आठवाँ, इसकी करें हम वन्दना।
भव-भव दुःखों का नाश हो, इस हेतु करते अर्चना।।
जिनवर गुणों की प्राप्ति हित, हम शांतिधारा कर रहे।
'आस्था' करें गुप्ति धरें, पुष्पाञ्जलि हम कर रहे।।

शांतये शांतिधारा।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं।।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- **कल्पवृक्ष चिंतामणि, कामधेनु भगवान।**
नंदीश्वर के नाथ का, करते हम गुणगान।।

(अडिल्ल छंद)

नंदीश्वर के बावन जिन गृह वंद्य हैं।
इन्द्रादिगण भक्ति करें अतिरम्य हैं।।
कार्तिक फागुन षाढ़ मास मन भावना।
नंदीश्वर दर्शन की करते कामना।।1।।

चार निकायों के सुर नित आते यहाँ।
पूजा करते पुण्य कमाते वो महा।।
चहुँ दिश में चारों निकाय के सुरपति।
भक्ति करके पाते वो सम्यक् मति।।2।।

पूर्व दिशा में कल्पवासी सुर पूजते।
भवनवासी सुर दक्षिण जिन को पूजते।।
व्यन्तरवासी पश्चिम में पूजा करें।
ज्योतिष सुरगण उत्तर में अर्चा करें।।3।।

प्रचुर भक्ति से नृत्य रचा फेरी करें।
अपना मुख पावन करने संस्तव करें।।
एक चित्त हो प्रभुवर की भक्ति करें।
विविध विधि से आठ प्रहर पूजा करें।।4।।

दो-दो प्रहर करें प्रभु की आराधना।
पौर्वाह्णिक अपराह्णिक में आराधना।।
पूर्वरात्रि पश्चिम रात्रि दो-दो घड़ी।
दिशा बदलकर पूजा करते वो बड़ी।।5।।

महाअर्चना आठ दिवस होती वहाँ।
नंदीश्वर चैत्यालय जिनप्रतिमा जहाँ।।
हम भी यहीं से प्रभुवर की पूजा करें।
श्रद्धा से 'आस्था' मुक्ति का पथ वरे।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें।।
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिश जिनालय पूजा विधान

अथ स्थापना (गीता छंद)

यह द्वीप नंदीश्वर कहा, इस द्वीप की पश्चिम दिशा।
मंदिर बने तेरह यहाँ, चारों दिशा विदिग्[1] दिशा।।
इसके सभी जिननाथ की, हम कर रहे आराधना।
प्रभु आपके आह्वान से, हो जाय कर्म विराधना।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

विपुल सुगन्धित नीर से, स्वर्ण कलश भर लाय।
न्हवन करें सुरगण वहाँ, भारी पुण्य कमाय।।
नंदीश्वर पश्चिम दिशा, तेरह मंदिर जान।
सब बिम्बों को पूज हम, बन जायें भगवान।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कालागुरु कर्पूर संग, चंदन कुंकुम लाय।
इन्द्र सुगन्धित द्रव्य ले, प्रभु पद लेप कराय।। नंदीश्वर..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कोमल निर्मल चन्द्र सम, तंदुल धवल सजाय।
प्रतिमाओं को देवगण, अक्षत पुञ्ज चढ़ाय।। नंदीश्वर..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

1. विदिशा

सेवन्ती पुन्नाग संग, विविध पुष्प की माल।
माला प्रभु पद में चढ़ा, अंत वरें जयमाल।।
नंदीश्वर पश्चिम दिशा, तेरह मंदिर जान।
सब बिम्बों को पूज हम, बन जायें भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अद्भुत अमृत रस भरे, षट् रस व्यञ्जन थाल।
सब देवेन्द्र चढ़ा रहे, भर-भर प्रभु को थाल।। नंदीश्वर..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कज्जल व कालुष्य बिन, रत्नदीप सुर लाय।
सुर कर प्रभु की आरती, केवलज्योति जगाय।। नंदीश्वर..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दिर में जिनबिम्ब को, सुरभित धूप चढ़ाय।
दिग् मण्डल तक देवगण, धूप गंध महकाय।। नंदीश्वर..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नारंगी केला पनस, मातुलिंग व आम।
पके फलों से सुर भजें, प्रभु को आठों याम।। नंदीश्वर..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नाचें चंवर ढुरा रहे, किंकिणियों संग देव।
अष्ट द्रव्य ले हाथ में, पूजें प्रभु को देव।। नंदीश्वर..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिशागत चैत्यालय के अर्घ

दोहा– पश्चिम के जिन चैत्य पे, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय।
तेरह जिनगृह नाथ को, मन–वचन–तन से ध्याय।।

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिक् स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(शंभु छंद)

यह द्वीप आठवाँ नंदीश्वर, पश्चिम दिश अंजनगिरि सोहे।
सिद्धों की रत्नमयी प्रतिमा, सुर किन्नरियों के मन मोहे।।
तेरह चैत्यालय के स्वामी, सबको शिवसुख सिद्धी दाता।
हम भी ध्वज अर्घ चढ़ाते हैं, हे नाथ तुम्हीं हो जग त्राता।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि अंजनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरी दधिमुख पूरब में, विजयावापी कहलाती है।
दधिसम जिनगृह की पूजा को, देवों की टोली जाती है।। तेरह..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापी मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैजयंति वापी दक्षिण में, अंजन दधिमुख ये धवल कहा।
ये पर्वत वापी अचल सभी, जिन मंदिर भी है अचल अहा।। तेरह..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि वैजयंती वापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है वापी 'जयंती' पश्चिम में, उस वापी में कमलादि खिले।
अंजनगिरि दधिमुख जिनवर के, दर्शन से अद्भुत शांति मिले।। तेरह..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि जयंती वापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी अपराजित नीर भरी, जय–जय ध्वनि इसपे आती है।
अंजन दधिमुख उत्तर दिश की, प्रतिमायें अति मनभाती हैं।। तेरह..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि अपराजिता वापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयावापी ईशान दिशा, रतिकर गिरि पर हैं जिन प्रतिमा।
शत पाँच धनुष ऊँची मूरत, अनुपम अविनाशी ये प्रतिमा।।
तेरह चैत्यालय के स्वामी, सबको शिवसुख सिद्धी दाता।
हम भी ध्वज अर्घ चढ़ाते हैं, हे नाथ तुम्हीं हो जग त्राता।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आग्नेय कोण विजया वापी, रतिकर पे सब जिन चैत्यालय।
इनकी परोक्ष पूजा भक्ति, भक्तों को है सुख का आलय।। तेरह..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि विजया वापी आग्नेयकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आग्नेय दिशि 'वैजयन्ति' द्रह, रतिकर की रत्नमयी प्रतिमा।
नाना रत्नों का अर्घ बना, पूजें हम शाश्वत जिन प्रतिमा।। तेरह..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि वैजयंती वापी आग्नेयकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैजयन्ति द्रह ये नैऋत्य में, नित नव्य[1] सुखों को दिलवाये।
त्रैलोक्य तिलक रतिकर जिन से, हम भी सच्चा सुख पा जायें।। तेरह..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि वैजयंती वापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी जयंती नैऋत्य दिशा, है परम श्रेष्ठ सुन्दर मंदिर।
रतिकर नग पे जिनवर जितने, उनके रत्नों के जिनमंदिर।। तेरह..।।10।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि जयंती वापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी जयंती वायव्य दिशा, रतिकर नग रत्नों सा चमके।
जिन चैत्य अकृत्रिम बने जहाँ, वो नौ रत्नों से नित दमके।। तेरह..।।11।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि जयंती वापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपराजित द्रह वायव्य कोण, सोने का रतिकर नग प्यारा।
जिनचैत्य चैत्यालय का वैभव, देवों द्वारा पूजित सारा।। तेरह..।।12।।

1. नये।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि अपराजिता वापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपराजित वापी रतिकर की, ईशान दिशा में कहलाये।
रतिकर की स्वयं सिद्ध प्रतिमा, रत्नों की आभा फैलाये।।
तेरह चैत्यालय के स्वामी, सबको शिवसुख सिद्धी दाता।
हम भी ध्वज अर्घ चढ़ाते हैं, हे नाथ तुम्हीं हो जग त्राता।।13।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि अपराजिता वापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

नंदीश्वर के पश्चिम दिश में, उन्नत गिरी अंजन हैं।
वहाँ प्रतिष्ठित प्रतिमाओं का, शत्-शत् अभिवंदन हैं।।
दधिमुख पर्वत की विदिशा में, रतिकर आठ कहे हैं।
तेरह चैत्यालय को हम सब, निशदिन पूज रहे हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

यह द्वीप शाश्वत आठवाँ, इसकी करें हम वन्दना।
भव-भव दुःखों का नाश हो, इस हेतु करते अर्चना।।
जिनवर गुणों की प्राप्ति हित, हम शांतिधारा कर रहे।
'आस्था' करें गुप्ति धरें, पुष्पाञ्जलि हम कर रहे।।

शांतये शांतिधारा।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं।।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- मंत्र जाप कर हम करें, जिनवर का गुणगान।
कीर्तन से कीर्ति मिले, भक्ति से भगवान।।

(पद्धरि छंद)

श्री नंदीश्वर को नमस्कार, हम नमते प्रभु को बार-बार।
चैत्यालय बावन हैं महान्, रत्नों के दिव्य प्रकाशवान।।1।।
चैत्यालय चारों दिश कहाय, बहुवर्णी सब प्रतिमा सुहाय।
पद्मासन सब प्रतिमा कहाय, शत पाँच धनुष ऊँची बताय।।2।।
चऊँ दिश में अंजनगिरी चार, हर गिरि पे वापी चार-चार।
उसकेचऊँ दिश दधिमुख बताय, दधिमुख दधि सम सुन्दर कहाय।।3।।
विदिशा में दो रतिकर सुहाय, सब रतिकर स्वर्णमयी बताय।
तेरह जिनमंदिर अति विशाल, हम सदा झुकायें इन्हें भाल।।4।।
इन्द्रादि देव भक्ति रचाय, सुर-किन्नरियाँ भी संग आय।
नाचत गावत बाजे बजाय, प्रभु का सुन्दर नाटक दिखाय।।5।।
जब-जब आष्टाह्निक पर्व आय, चारों निकाय सुर वहाँ जाय।
कार्तिक फाल्गुन आषाढ़ मास, ये शुक्ल पक्ष में पर्व खास।।6।।
अष्टम तिथि से प्रारम्भ होय, पूनम तिथि में सम्पूर्ण होय।
सुर आठ प्रहर पूजा रचाय, शुभ आठ दिवस दिन-रात ध्याय।।7।।
नंदीश्वर में सुर देव जाय, मुनि मनुज खगाधिप नहीं जाय।
हम सब परोक्ष वन्दें अपार, दर्शन दो प्रभुवर एक बार।।8।।
जिन प्रतिमाओं को नमस्कार, उन सबको वंदें बार-बार।
त्रय गुप्ति समाधि सुखद सार, 'आस्था' से पावे लोक पार।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिम दिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें।।
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

नन्दीश्वर द्वीप उत्तर दिश जिनालय पूजा विधान

अथ स्थापना (नरेन्द्र छंद)

नंदीश्वर के जिनभवनों में, प्रतिमा रत्नमयी हैं।
इन्द्रनील मणियों के पर्वत, कोई स्वर्णमयी हैं।।
अंजन दधिमुख रतिकर नग में, शाश्वत त्रिभुवन स्वामी।
करते हम आह्वान जिनेश्वर, हृदय विराजो स्वामी।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज- दीप अढ़ाई सरस...)

कलश में नीर भर लाये, प्रभु को पूजने आये।
जरादिक रोग विनशायें, मोक्ष का लाभ हम पायें।।
आठवाँ द्वीप कहलाये, वहाँ की उत्तर दिश ध्यायें।
त्रयोदश तीर्थ हम ध्यायें, सुखों की सम्पदा पायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्धित गंध मनहारा, मिला प्रभु का सुखद द्वारा।
चढ़ाये गंध हम सारा, मिले पापों से छुटकारा।। आठवाँ..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र सम रत्न हम लाये, धवल अक्षत सजा लाये।
प्रभु की अर्चना गायें, परम पद प्राप्त हो जाये।। आठवाँ..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचरंगी सुमन लायें, पंच पापों को विनशायें।
प्रभु पद पुष्प हम लाये, काम का मद उतर जाये।।
आठवाँ द्वीप कहलाये, वहाँ की उत्तर दिश ध्यायें।
त्रयोदश तीर्थ हम ध्यायें, सुखों की सम्पदा पायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सताये ये क्षुधा भारी, लगी दिन-रात बीमारी।
लिये मिष्ठान्न नर-नारी, करें पूजा बड़ी भारी।। आठवाँ..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमय दीप की थाली, लगे जैसे हो दीवाली।
प्रभु की अर्चना आली, चढ़ायें दीप की थाली।। आठवाँ..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घट गंध फैलाये, भाव दूषण विनश जाये।
भक्त भगवान को ध्यायें, जलाने कर्म हम आये।। आठवाँ..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

संतरा आम वा केला, चढ़ाये भक्त अलेबला।
लगा प्रभु द्वार पे मेला, आ गया पर्व अलबेला।। आठवाँ..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्त भक्ति में रंग जाये, प्रभु का संग मिल जाये।
प्रभु के द्वार पे आये, चढ़ाने अर्घ हम लाये।। आठवाँ..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिशागत चैत्यालय के अर्घ

दोहा– उत्तर के जिनबिम्ब पे, सुन्दर पुष्प चढ़ाय।
तेरह जिनगृह चैत्य को, मन–वच–तन से ध्याय।।

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिक् स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

शेर छंद (हे दीन बंधु श्रीपति...)

तेरह सदन बने यहाँ जिनदेव के महान्।
पूजा से पूज्य पद मिले ये माँगते वरदान।।
अंजनगिरि उत्तर दिशा में चमचमा रही।
पूजा करें जिनराज की यह मन को भा रही।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि अंजनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि पूरब दिशी रम्या सुवापिका।
तल्लीन हो जिनभक्त पाये धर्म की शिखा।। अंजनगिरि..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापी मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि दक्षिण दिशी रमणीया वापिका।
पूजा करें तीर्थेश की सुर देव–देवियाँ।। अंजनगिरि..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रमणीया वापी मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिशा अंजन गिरि की वापी 'सुप्रभा'।
दधिमुख के जिनभवन की हमें मिल रही प्रभा।। अंजनगिरि..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभावापी मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रह सर्वतोभद्रा सरस उत्तर दिशा में है।
अंजन दधिमुख मध्य में जिनचैत्य बने हैं।। अंजनगिरि..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापी मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छंद)

रम्या द्रह ईशान, रतिकर स्वर्णमयी है।
इनमें जिनभगवान, प्रतिमा रत्नमयी है।।
नंदीश्वर में मात्र, देव-देवियाँ जाते।
हम परोक्ष में पूज, उनको अर्घ चढ़ाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि 'रम्या' श्रेष्ठ, दिश आग्नेय कहाती।
रतिकर आलय श्रेष्ठ, देव जातियाँ जाती।। नंदीश्वर..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापी आग्नेयकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रमणीया' ह्रद रम्य, अग्नि दिशा में आये।
रतिकर नग अतिरम्य, सुरगण वाद्य बजायें।। नंदीश्वर..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रमणीयावापी आग्नेयकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रह 'रमणीया' भव्य, रतिकर रत्नों वाला।
नैऋत्य जिनग्रह मध्य, रंग-बिरंगी माला।। नंदीश्वर..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रमणीया वापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुप्रभ द्रह नैऋत्य, रतिकर नग जिनदेवा।
चौंसठ चँवर ढुँराय, लाये देव चंदेवा।। नंदीश्वर..।।10।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभा वापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुप्रभ वायव्य कोण, है रतिकर नग वापी।
हम इस विध जिन ध्याय, ना हो जन्म कदापि।।
नंदीश्वर में मात्र, देव-देवियाँ जाते।
हम परोक्ष में पूज, उनको अर्घ चढ़ाते।।11।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभावापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि सर्वतोभद्र, रतिकर स्वर्ण समाना।
वायव के जिन चैत्य, देते पुण्य खजाना।। नंदीश्वर..।।12।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनगृह शाश्वत रम्य, अविचल हैं प्रतिमायें।
वापि सर्वतोभद्र, रतिकर रम्य बतायें।। नंदीश्वर..।।13।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रा वापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

द्वीप आठवाँ नंदीश्वर ये, उत्तर दिश सुखकारी।
रतिकर दधिमुख अंजनगिरि के, मन्दिर मंगलकारी।।
तेरह जिन चैत्यालय को हम, अर्घ पवित्र चढ़ायें।
उनके शाश्वत जिनबिम्बों को, हम सब शीश झुकायें।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

यह द्वीप शाश्वत आठवाँ, इसकी करें हम वन्दना।
भव-भव दुःखों का नाश हो, इस हेतु करते अर्चना।।
जिनवर गुणों की प्राप्ति हित, हम शांतिधारा कर रहे।
'आस्था' करें गुप्ति धरें, पुष्पाञ्जलि हम कर रहे।।

शांतये शांतिधारा।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं।।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

(धत्ता छन्द)

नंदीश्वर स्वामी, हे जगनामी, बावन चैत्यालय की जय।
जयमाल तिहारी, है सुखकारी, देती है हर भव में जय।।

(दोहा)

नंदीश्वर शुभ द्वीप की, जयमाला सुखकार।
द्वीप आठवें के प्रभु, तुम हो मंगलकार।।1।।

तेरह चैत्यालय कहें, उत्तर दिश के माय।
जो प्रत्यक्ष में पूजने, सुरगण आदि जाय।।2।।

मंत्र जाप पूजा करें, कीर्तन पाठ कराय।
नृत्य गान संस्तव सुखद, आठों याम रचाय।।3।।

प्रभु नाम के मंत्र से, होवे पाप विनाश।
श्री जिनवर के जाप से, पहुँचे प्रभु के पास।।4।।

मंत्र जाप के अंत में, स्वाहा शब्द सुहाय।
स्वाहा विद्या वाच्य है, विद्या ज्ञान बढ़ाय।।5।।

स्वाहा बिन गर जाप हो, मंत्र रूप कहलाय।
मंत्रों की शक्ति अति, संकट दूर कराय।।6।।

करें आरती भक्ति से, दीपावली सजाय।
रत्नों के उस चैत्य को, दीपों से चमकाय।।7।।

चारों दिश में घूमकर, फेरी नित्य लगाय।
अंजन दधिमुख चैत्य पे, रतिकर पे सुर जाय।।8।।

विद्याधर नर नारी वा, ऋद्धिधर मुनिराय।
इस नंदीश्वर द्वीप में, मनुज कभी ना जाय॥9॥

हम भक्ति करते प्रभु, दो ऐसा वरदान।
हम भी सिद्ध समान हो, दर्शन दो भगवान॥10॥

प्रभुवर की आराधना, गुप्ति व्रतों के साथ।
जिनवर पे 'आस्था' बढ़े, सदा झुकायें माथ॥11॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तर दिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें॥
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

समुच्चय मंत्र :- (1) ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर संज्ञाय नमः।
(2) ॐ ह्रीं श्री अष्टमहाविभूति संज्ञाय नमः।
(3) ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकसार संज्ञाय नमः।
(4) ॐ ह्रीं श्री चतुर्मुख संज्ञाय नमः।
(5) ॐ ह्रीं श्री पञ्चमहालक्षण संज्ञाय नमः।
(6) ॐ ह्रीं श्री स्वर्ग सोपान संज्ञाय नमः।
(7) ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्र संज्ञाय नमः।
(8) ॐ ह्रीं श्री इन्द्रध्वज संज्ञाय नमः।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

समुच्चय जयमाला

दोहा- श्री नंदीश्वर द्वीप में, बावन जिनगृह माल।
उनकी जयमाला पढ़ें, भरकर श्रीफल थाल।।

(नरेन्द्र छंद)

द्वीप आठवें नंदीश्वर की, जयमाला हम गायें।
बावन जिन चैत्यालय को हम, झुक-झुक शीश नवायें।।
बड़े पुण्य से नंदीश्वर के, दर्शन सुरपति पायें।
सर्व देव-देवी भी आकर, अतिशय भक्ति रचायें।।1।।

प्रथम[1] इन्द्र हस्ती पे चढ़कर, कर में श्रीफल लाये।
ईशानेन्द्र गजारूढ़ होकर, पूंगीफल भर लाये।।
सानत इन्द्र सिंह पे आरूढ़, आम्र गुच्छ फल लाये।
इन्द्र महेन्द्र अश्व पे चढ़कर, केले लेकर जाये।।2।।

श्री ब्रह्मेन्द्र हंस आरूढ़ हो, पुष्प केतकी लाये।
क्रोंच पक्षी आरूढ़ ब्रह्मोत्तर, कमल हाथ में लाये।।
श्री शुकेन्द्र चढ़े चकवा पर, पुष्प हाथ में लाये।
तोता पे महाशुक्र इन्द्र चढ़, फूलमाल ले आये।।3।।

श्री शतार सुर कोयल पे चढ़, नीलकमल ले आये।
सहस्रार सुर चले गरुड़ पे, फल अनार कर लाये।।
आनत सुरपति विहगाधिप चढ़, पनस गुच्छ फल लाये।
प्राणत सुरपति तुम्बरु फल ले, पद्म यान से आये।।4।।

गन्ने लेकर आरणेन्द्र भी, कुमुद यान से आये।
चँवर हाथ ले अच्युतेन्द्र भी, मयूर यान से आये।।

1. पहला (सौधर्म)

भवनवासी व्यन्तर ज्योतिष सुर, निज वाहन पर जाये।
मालाएँ पुष्पों की ले वे, विविध फलों को लायें।।5।।

यहाँ अखण्डित आठ दिनों तक, सुरपति भक्ति रचायें।
आठों याम प्रभु को पूजें, द्रव्य अनेक चढ़ायें।।
मनुज और ऋद्धिधर मुनिवर, वहाँ नहीं जा पायें।
वंदन पूजन कर परोक्ष से, हम सब पुण्य कमायें।।6।।

श्रीमत् सिद्ध जिनेश्वर भगवन्, सर्व सिद्धियाँ देते।
जिनभक्तों की संकट पीड़ा, श्री जिनवर हर लेते।।
मंगलकारी जिनपूजा ये, हमको शांति दिलाये।
यही कामना एक हमारी, नित जिन भक्ति रचायें।।7।।

हे प्रभु ! हम सब बनें पुजारी, तव समान पद पाने।
कर्म शृंखला के बंधन को, आये आज नशाने।।
करो नाथ कल्याण हमारा, समिति गुप्ति हम धारें।
दृढ़ 'आस्था' ही हर प्राणी को, भव से पार उतारे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे चतुर्दिक संबंधि द्वि-पंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें।।
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

प्रशस्ति

(अडिल्ल छंद)

आदि शांति श्री पार्श्व वीर को है नमन।
देव-शास्त्र-गुरु तीनों को शत्-शत् नमन॥
परमेष्ठी पाँचों को मेरा है नमन।
कुंथु कनक गुप्तिनंदी गुरु को नमन॥1॥

श्रुतपंचमी गुरु पुष्यामृत शुभ योग में।
नंदीश्वर का पाठ लिखा उस योग में॥
पच्चीस सौ चालीस वीर निर्वाण था।
दो हजार सन् तेरह व गुरुवार था॥2॥

प्रभु भक्ति में कलम सदा चलती रहे।
गुरुओं का आशीष सदा मिलता रहे॥
छंद शब्द व मात्रा का ना ज्ञान है।
भक्ति के वश मैंने लिखा विधान ये॥3॥

(दोहा)

वसुधा पे जब तक रहे, सूरज चंदा आग।
तब तक रहे विधान यह, जागे मेरा भाग्य॥
जिनगुण सम्पत् प्राप्त हो, 'आस्था' को दो दान।
तीन गुप्ति चारित्र धर, बनूँ सिद्ध भगवान॥4॥

॥ इति अलम् ॥

नंदीश्वर द्वीप आरती

(तर्ज – माईन माईन....)

नंदीश्वर के श्री विधान की, आरती मंगल गायें।
बावन जिन चैत्यालय की हम, आरती करने आये।।
बोलो नंदीश्वर की जय, बोलो सब जिनवर की जय

द्वीप आठवाँ नंदीश्वर ये, रत्नमयी मनहारी।
ऊँची-ऊँची इसमें प्रतिमा, रंग-बिरंगी प्यारी।।
स्वयं सिद्ध भगवन् ये सारे-2, इनको सुरगण ध्यायें।
बावन जिन.....

अंजनगिरि रतिकर दधिमुख ये, पर्वत मणियों वाले।
अलग-अलग हैं यहाँ वापियाँ, मन्दिर रत्नों वाले।।
अकृत्रिम जिनबिम्बों की हम-2, गुण गाथा को गायें।
बावन जिन.....

अलग-अलग मन्दिर में प्रतिमा, इक सौ आठ कहीं हैं।
पाँच शतक धनु ऊँची प्रतिमा, सारी रत्नमयी हैं।।
प्रभुवर सारे मंगल करते-2, अतिशय जिन दिखलायें।
बावन जिन.....

सर्व सुरासुर आठ दिवस तक, नंदीश्वर में जाते।
करें निरन्तर पूजा भक्ति, फेरी नित्य लगाते।।
हम भी 'आस्था' करते प्रभु पे-2, शीघ्र सुदर्शन पायें।
बावन जिन.....

***

अर्घावली

श्री जिनवाणी माता

(चामर छंद)

नीर गंध वस्त्र आदि अर्घ भाव से लिया।
आपका विधान मात भक्ति भाव से किया।।
दिव्य देशना महान है जिनेश आपकी।
मात अर्चना हरे प्रवंचना विभाव की।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गणाधिपति गणधर भगवान का अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

कर्म अष्ट से लड़ने हेतु वेष दिगम्बर धार लिया।
क्षायिक पद की अभिलाषा से कर्म अरि पर वार किया।।
जल फल आदि आठ द्रव्य से करता प्रभु का अभिनंदन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर उनका मैं करता अर्चन।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वगणधर परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी

(शेर छंद)

आचार्य कुंथु सिंधु हैं वात्सल्य दिवाकर।
हम धन्य-धन्य आज उनको अर्घ चढ़ाकर।।
जिनधर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वंदे कुंथुसागरम्।।

ॐ ह्रीं गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी

(जोगीरासा छंद)

कनकनंदी की ज्ञान रश्मियाँ ज्ञान किरण फैलाये।
वैज्ञानिक आचार्य हमारे सबको धर्म सिखाये।।
साम्य भाव ही सुख स्वभाव है यही गुरु बतलाये।
कनक रजत की थाल सजाकर गुरु को अर्घ चढ़ाये।।

ॐ ह्रीं वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव का अर्घ

(1) (शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी ने, कमाल कर दिया।
वात्सल्य से सभी को, मालामाल कर दिया।।
गुरुदेव मुस्कुराके, आशीर्वाद दीजिये।
पूजा हमारी आप ये, स्वीकार कीजिये।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2) (तर्ज - माईन-माईन....)

प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी, महाकवि गुणधारी।
आर्ष मार्ग की राह बतायें, जय हो गुरु तुम्हारी।।
बोलो गुप्तिनंदी की जय, बोलो कविहृदय की जय।
बोलो महाकवि की जय, बोलो धर्म सूर्य की जय।।
नीर गंध अक्षत पुष्पादि, अष्ट द्रव्य हम लाये।
कुंथु कनकनंदी के नंदन, तुमको अर्घ चढ़ायें।।
धर्म तीर्थ के प्रेरक गुरुवर-2, जन-जन के उपकारी।
हम सब तुमको शीश झुकायें, जय हो गुरु तुम्हारी।
बोलो गुप्तिनंदी की जय.....

ॐ ह्रीं परम पूज्य प्रज्ञायोगी, आर्षमार्ग संरक्षक, कविहृदय, धर्मक्रांति सूर्य, ज्ञान दिवाकर, व्याख्यान वाचस्पति, श्रावक संस्कार उन्नायक, महाकवि आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी

अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..... प्रान्ते–नगरे..... मासानांमासे.....मासे.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी॥1॥

(नोट–यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति ! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर॥2॥

आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा॥3॥

छत्र चँवर भामंडल चम–चम, देव–दुंदुभि बजती दुम–दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥

आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ॥5॥
पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक॥1॥
जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान॥2॥
अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द॥3॥
मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)

(नोट-दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय॥

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

अतिशय क्षेत्र धर्मतीर्थ, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) द्वारा

आर्ष मार्ग संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य

श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय आराधना
2. श्री लघु रत्नत्रय आराधना
3. श्री वृहद् रत्नत्रय विधान
4. श्री लघु रत्नत्रय विधान
5. श्री रत्नत्रय भक्ति संहिता
6. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 1)
7. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 2)
8. श्री वृहद गणधर वलय विधान
9. लघु गणधर वलय विधान
10. श्री वृहद नवग्रह शान्ति विधान
11. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (श्री पद्मप्रभु आराधना)
12. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
13. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (श्री वासुपूज्य आराधना)
14. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (श्री शांतिनाथ आराधना)
15. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (श्री आदिनाथ आराधना)
16. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (श्री पुष्पदंत आराधना)
17. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
18. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (श्री नेमिनाथ आराधना)
19. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (श्री पार्श्वनाथ आराधना)
20. धर्मसूर्य श्री पद्मप्रभ-वासुपूज्य-नेमिनाथ विधान
21. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (बड़ी)
22. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (छोटी)
23. श्री पंचकल्याणक विधान
24. श्री त्रिकाल चौबीसी (लक्ष्मी प्राप्ति) रोट तीज विधान
25. श्री तीस चौबीसी (महालक्ष्मी प्राप्ति) विधान
26. श्री सर्व तीर्थंकर विधान
27. श्री विजय पताका विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री पंच परमेष्ठी (सर्व सिद्धि) विधान
30. श्री विद्या प्राप्ति विधान
31. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
32. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
33. श्री भक्तामर विधान
34. श्री कल्याण मंदिर विधान
35. श्री एकीभाव विधान
36. श्री विषापहार विधान
37. श्री णमोकार विधान
38. श्री जिन सहस्त्रनाम विधान
39. श्री चौबीस तीर्थंकर, लक्ष्मी प्राप्ति बाहुबली-धर्मतीर्थ एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान

40. श्री चन्द्रप्रभु विधान
41. श्री शान्तिनाथ विधान
42. श्री सर्व दोष प्रायश्चित्त विधान
43. श्री रविव्रत विधान
44. श्री पंचमेरु-दशलक्षण-सोलहकारण विधान
45. श्री नंदीश्वर विधान
46. श्री चन्दन षष्टी व्रत विधान
47. आचार्य शांतिसागर विधान
48. आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
49. आचार्य श्री कनककनंदी विधान
50. आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान
51. श्री छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान
52. श्री भैरव पद्मावती विधान
53. श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह
54. सावधान (काव्य संग्रह)
55. महासती अंजना
56. कौडियो में राज्य
57. महासती मनोरमा
58. महासती चन्दनबाला
59. विलक्षण ज्ञानी (आचार्य श्री कनककनंदी जी चरित्र कथा)
60. वात्सल्य मूर्ति (गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी स्मारिका)
61. धर्मतीर्थ प्रवेशिका (भाग-1)